दलित विचार और आधुनिक हिंदी साहित्य

MEENAKSHI
Research Scholar
Department Of Hindi
Opjs University

DR DIGVIJAY KUMAR SHARMA
Professor
Department Of Hindi
Opjs University

सारांश

प्रेमचंद इस मायने में अद्वितीय हैं कि वे निम्न वर्गों के आर्थिक शोषण से कभी नहीं चूकते। इसी शोषण के कारण जाति, धर्म, अधर्म, ऊंच-नीच सभी को तामझाम के रूप में तैयार किया गया है। प्रेमचंद ने एक क्रांतिकारी उपलब्धि तब हासिल की जब उन्होंने एक अछूत जाति के सदस्य को नायक का दर्जा दिया। उन्होंने सूरदास में गांधी के व्यक्तित्व को अपनाकर और भी बड़ी उपलब्धि हासिल की और धर्म-न्याय-सत्य की लड़ाई में उनकी भागीदारी के परिणामस्वरूप, उन्हें बहादुर, निस्वार्थ महापुरुषों की भारतीय परंपरा से जोड़ा। वह भिखारी और अंधा है, फिर भी उसके पास तेज बुद्धि है।

कहानी में उच्च जाति के सभी व्यक्ति- राजा, महाराजा, शासक, उद्योगपति, आदि-आदर के साथ उन्हें नमन करते हैं और उनके प्रभुत्व को स्वीकार करते हैं। पुस्तक के अंत में, वह एक बलिदान करता है जो गांधी के बराबर है। नतीजतन, "रंगभूमि" गांधी को समाज के शिखर पर पहुंचाती है और किसी अन्य जाति को अपमानित किए बिना दलित नायक को गांधी का प्रतीक बनाती है। जाति व्यवस्था, छुआछूत, शोषण, अन्याय और दमन के खिलाफ भारतीय समाज में जो लड़ाई अभी भी मौजूद है, वह बहुत लंबे समय से चल रही है। अन्याय और आधिपत्य के खिलाफ धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संघर्ष प्राचीन काल से जारी है। तीव्रता और ठहराव के दौर से गुजरते हुए, समय और उसके परिवेश की माँगों के परिणामस्वरूप यह आंदोलन रूप बदलता रहा है। दलित वर्ण व्यवस्था केवल एक शक्तिशाली आंदोलन और गंभीर विचार है जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का नेतृत्व कर रही है और सभी पहलुओं के माध्यम से यात्रा कर रही है।

मुख्य शब्द

दलित चर्चा, अछूत जाति, हिंदी साहित्य

प्रस्तावना

भारत पर अंग्रेजों के आधिपत्य ने भारतीयों की प्रसन्नता और जोश को चकनाचूर कर दिया। गुलामी के डर को महसूस करने के बाद, उन्होंने देश की आजादी के लिए काम करने का फैसला किया। परिणामस्वरूप, अस्तित्व की लड़ाई तेज हो गई, और जातीय जीवन भी उभरने लगा। भारत की जनता ने खुद को एकजुट किया और आजादी की लड़ाई में शामिल हो गए। उस समय से, पुनर्जागरण को शुरू होने के रूप में देखा जाता है। वास्तव में, भारत में पुनर्जागरण 1857 के विद्रोह के बाद तक शुरू नहीं हुआ था। भारतीयों के बढ़ते पुनरुत्थान के बावजूद कई बदलाव हुए। यह क्रांति न केवल समाज के एक क्षेत्र में बल्कि इसके सभी पहलुओं में हुई, चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक हो।

"दलित" में ऐसे वर्ग थे जिन्हें अछूत माना जाता था, लेकिन बुनकर, धोबी, दलित, चरवाहा, महरी, सपेरा, माली, मदारी, भुंगी, पासी, कंजर आदि नामों से जाने वाली सभी निचली जातियाँ भी थीं। "दलित" शब्द एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जो पिछड़ा, उत्पीड़ित, अशिक्षित और निराश्रित है, और जिसका धर्म उच्च वर्णों की सेवा है, एक जाति वर्ग जिसमें शूद्र शामिल हैं। एक दलित व्यक्ति वह होता है जो जाति, धर्म, कला, पेशे आदि सहित जीवन के सभी पहलुओं में दलित होता है। कुछ गैर-दलित लेखक सहानुभूति पर आधारित हैं, लेकिन वे एक नए प्रकार के दलित-उत्पीड़न हैं, जबकि दलित लेखक इस दलित समुदाय के उत्थान और उत्थान के लिए रचना में उल्लेखनीय सटीकता के साथ अपनी महसूस की गई वास्तविकताओं को प्रकट करते हुए साहित्य बना रहे हैं।

यदि इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया जाए तो यह दलित विमर्श को मजबूत और विस्तृत करेगा और जातिवाद की क्रूरता और उत्पीड़न के कुछ नए कोणों को प्रकट करेगा। यदि दलित लेखक जातिवाद का अभ्यास करना चाहते हैं, तो गैर-दलित लेखकों के बहिष्कार और तिरस्कार से उनके प्रयासों में बाधा आएगी, जिससे दलित लेखन पर संदेह होगा। गैर-दलित लेखक प्रेमचंद और निराला की रचनाएँ दलितों पर प्रवचन को पूरा करती हैं और साहित्य के मूल सिद्धांतों के विरोध में "द्विज साहित्य" और "दलित साहित्य" के अलगाव की आलोचना करती हैं। दो अनुभव, जिन्हें "आत्म-साक्षात्कार" और "पैरा-प्राप्ति" के रूप में जाना जाता है, दलित प्रवचन में विलीन हो जाते हैं और इसे एक ठोस और व्यापक आकार देते हैं।

आर्थिक क्षेत्र

कृषि ने आर्थिक प्रगति को आगे बढ़ाया। उन क्षेत्रों में जो कभी हल और अन्य उपकरणों के साथ खेती के लिए उपयोग किए जाते थे, अब नए उपकरण और तकनीकों को नियोजित किया जा रहा है, और समकालीन वाहन व्यवहार विकसित हुआ है। रेलवे, बस संचालन आदि की शुरुआत के परिणामस्वरूप, उद्योग को बहुत लाभ हुआ और वस्तुओं का आयात और निर्यात होने लगा। आज के

उद्योग उभरने लगे। समकालीन उद्योगों का विकास काफी हद तक वाहन और ले जाने के व्यवहार से प्रभावित था। नतीजतन, अर्थव्यवस्था में सुधार हासिल किया गया था। यह प्रेस, पत्राचार, डाक सेवा, टेलीग्राफ और टेलीफोन की बदौलत "सोने में चमकता हुआ" था।

सामाजिक क्षेत्र

थियोसोफिकल सोसाइटी, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन और वेद समाज सहित कई संगठनों की स्थापना लोगों में सामाजिक चेतना बढ़ाने के लिए की गई थी। सती प्रथा, बाल विवाह, कन्या को दूध पिलाने की प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने वाले s, विधवा विवाह, वर्ग भेदभाव, महिलाओं की स्वतंत्रता, अधिकार, शिक्षा और मुक्ति। बेहतर सभ्यता के प्रयास में आदिम समाज की संकीर्णता, परंपरावाद आदि के खिलाफ लड़ाई लड़ी गई।

धार्मिक क्षेत्र:

धार्मिक क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए, जिनमें एकेश्वरवाद की शुरूआत और बहुदेववाद की अस्वीकृति, बाल बलि और मूर्तिपूजा की अस्वीकृति, परंपरा से बंधे अंधेपन की अस्वीकृति, धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देना आदि शामिल हैं। परिणामस्वरूप, जिस तरह से लोगों की सोच बदल गई। आज की संस्कृति में छुआछूत नहीं है। लोगों के सोचने के तरीके में इस बदलाव के लिए पुनर्जागरण को दोषी ठहराया जाता है।

राजनीतिक क्षेत्र:

जैसे-जैसे सेना का आधुनिकीकरण हुआ और उसी वटी प्रणाली का पुनर्गठन किया गया, इस क्षेत्र में कई परिवर्तन हुए। पुनर्जागरण ने भारत की स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

शैक्षणिक क्षेत्र:

पुनर्जागरण ने शिक्षा सहित अन्य क्षेत्रों में भी परिवर्तन लाए, जैसे कि महिलाओं की शिक्षा की शुरुआत, विदेश में अध्ययन करने के लिए यात्रा करने वाले व्यक्ति, शिक्षा के प्रति जागरूक लोगों आदि। राष्ट्र के हर क्षेत्र में लोगों के तरीके में गहरा परिवर्तन देखा गया। पुनर्जागरण के परिणाम के रूप में सोचा। यह परिवर्तन साहित्य पर भी लागू हुआ। जबकि पिछला साहित्य सौंदर्य, आनंद और विलासिता के विषयों का उपयोग करके लिखा गया था, भारतेंदु 1857 के पुनर्जागरण तक नहीं आया, जिसने "नरेश युग" के अंत और "जनयुग" की शुरुआत को चिह्नित किया। तब से हिंदी लेखन का पुनरुत्थान हुआ है। उनका "भारत दुख" भारत के नए दौर की जानकारी देने के लिए प्रयोग किया जाता था।

साहित्य अब खारीबोली में लिखा गया था, जिसने अब ब्रजभाषा और अवधी को प्रमुख भाषाओं के रूप में बदल दिया था। यह संक्रमण, जिसे पुनर्जागरण द्वारा संभव बनाया गया था, हिंदी साहित्य में सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आम दर्शकों को साहित्य को अधिक आसानी से पढ़ने और लेखकों के संदेश और लक्ष्यों को बेहतर ढंग से समझने की अनुमति देता है। राष्ट्र में किए जा रहे कार्यों को समझने और उसमें भाग लेने में सक्षम होना स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण था, और लेखकों और लेखकों ने अपने कार्यों के माध्यम से इस आवश्यकता को पूरा किया। लगभग उसी समय जब गांधीजी ने अपना राजनीतिक जीवन शुरू किया, प्रेमचंद ने अपना साहित्यिक जीवन शुरू किया। किंवदंती के अनुसार, प्रेमचंद एक समाज सुधारक, एक गांधीवादी, एक यथार्थवादी कथाकार और एक आदर्शवादी थे।

यह स्पष्ट हो जाता है कि वह एक कथाकार थे जो गांधीवाद से प्रेरित थे और अपने आदर्शों के अनुसार लिखते थे। गांधीजी का उन पर प्रभाव था, और उन्होंने देशभक्ति पर कई रचनाएँ लिखीं, जैसे सांसारिक प्रेम और देशभक्ति, आल्हा, यह मेरी मातृभूमि है, मृत्यु का प्राथमिक कारण सुहाग की साड़ी के नीचे छिपा है, राजभक्त, जुलूस, पत्नी से पति, शराब की दुकान आहुति, जेल आदि। प्रेमचंद ने समाज के हर पहलू पर एक कहानी लिखी है, और अपनी कहानियों के माध्यम से लोगों को जीवन की कठोर वास्तविकताओं, साहूकारों के क्रूर पंजे, नौकरी पेशा, मध्यम वर्ग के कम वेतन के बारे में बताया है। अंध संस्कार, अछूतों की दरिद्रता, क्रान्तिकारी देशभक्तों का उबलता रोष, धर्म के नाम पर मानवीय मान्यताओं के विरुद्ध ढोंग और समाज की कुरीतियों का ढोंग। उन्होंने इन मुद्दों के आधार पर नए युग की अवधारणाओं को भी जनता के सामने पेश किया। पुराने पूर्वाग्रहों को खत्म करके, यह हमारे देश और उसके नागरिकों को एक साथ आने और नए भारत का प्रतीक बनाने में मदद करने के लिए किया गया है।

दलित का मतलब

साहित्य और संस्कृति में सदियों से इसकी उपेक्षा की जाती रही है। वह व्यक्ति जिसे करुणा के प्राप्तकर्ता के रूप में नामित किया गया था और शुद्ध, हरिजन, अवर्ण, पंचम, अतिशूद्र इत्यादि जैसी उपाधियां दी गई थीं। प्रख्यात मराठी दलित लेखक शरण कुमार लिंबाले ने एक बार कहा था, "दलित "दया" को नापसंद करता है, न कि करुणा और दया "है। उपयुक्त।" उनकी अभिव्यक्ति, व्यापकता, प्रासंगिकता और पहचान के संदर्भ में, "दलित" और "दलित साहित्य" शब्द आज भी शिक्षाविदों के बीच साहित्यिक विवाद का केंद्र बिंदु बने हुए हैं। परिणामस्वरूप, "दलित" और "दलित साहित्य" की एक अधिक व्यापक समझ और चर्चा। दलित" की आवश्यकता है। दलित नाम से जाने जाने वाले दलित

लोगों का इतिहास भारत में हिंदू सभ्यता जितना ही प्राचीन है। भारतीय संस्कृति का एक विशिष्ट पहलू चतुर्वर्ण्य प्रणाली है। चतुर्वर्ण्य प्रणाली, जो चार जातियों पर आधारित है, जिन्हें जाना जाता है वर्ण-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र-जाति पदानुक्रम में मौजूद हैं जैसा कि ऋग्वैदिक काल में हुआ था। शूद्र, जिसे अन्य तीन वर्णों की सेवा करने के लिए माना जाता है, इन चार वर्णों में सबसे कम है .

200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी तक, मनु के कानूनी ग्रंथ "मनुस्मृति" ने शूद्रों की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान की। मनु ने अपने उपन्यास में शूद्रों को घोर अमानवीयता के साथ चित्रित किया है।

प्राचीन काल में शूद्रों की स्थिति निम्न थी और उनका अस्तित्व व्यर्थ था। उस समय शूद्रों के जीवन का एकमात्र उद्देश्य ब्राह्मण के लिए दास श्रम करना था। इतिहासकार रामशरण शर्मा ने अपनी पुस्तक "शूद्रों का प्राचीन इतिहास" में लिखा है कि उस समय शूद्रों की स्थिति और खराब हो गई थी।

मौर्य कृति में कौटिल्य के निर्देशानुसार कौटिल्य के अर्थशास्त्री ए, एक शूद्र जो खुद को ब्राह्मण बताता है, देवताओं से चोरी करता है, या शासक का दुश्मन है, उसकी आंखों को अजीब उपायों से नष्ट कर देना चाहिए या 800 सबक का जुर्माना देना चाहिए। कौटिल्य के अर्थशास्त्र का आरोप आर. श्याम शास्त्री का दूसरा संस्करण, मैसूर, 1924, पृष्ठ 10-10।

व्याख्यानों के अनुसार, यह माना जाता है कि चतुर्वर्ण्य प्रणाली लक्षणों, कृत्यों और प्रकृति पर आधारित थी; उच्च-निम्न, श्रेष्ठ-आद्यम, या स्पर्श-अछूत जैसी अवधारणाओं के लिए कोई जगह नहीं थी; इसके बजाय, किसी व्यक्ति का चरित्र कर्म द्वारा तय किया जा सकता है और बदल सकता है। हालाँकि, इस वर्ण व्यवस्था को बाद के वैदिक युग के समय तक एक जाति से बदल दिया गया था क्योंकि यह जन्म पर आधारित थी। चार वर्णों को इस प्रकार चार जातियों में विभाजित किया गया और इन्हीं से हजारों जातियों का उदय हुआ।

यह वर्ग निम्नलिखित कारणों से महात्मा गांधी द्वारा "हरिजन" शब्द के प्रयोग से असहमत था:

• हरिजन शब्द दयालुता की भावना को व्यक्त करता है। मंदिरों में देवदासियों से पैदा हुए बच्चों को हरिजन के रूप में भी जाना जाता था, और वे हरामी की सामाजिक पहचान साझा करते थे। खानाबदोश खुद को हरिजन क्यों नहीं कहते? वे खुद को हरिजन नहीं मानते।

• हरिजन शब्द हीनता की भावना को व्यक्त करता है।

दलित चेतना/दलित आंदोलन:

हिंदी साहित्य में दलित आंदोलन मूल रूप से इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में प्रकट हुआ और धीरे-धीरे एक शक्तिशाली शक्ति के रूप में विकसित हुआ। अन्य हिंदी पत्रिकाओं ने दलित-चेतना/दलित आंदोलन पर चर्चा करके इसे और भी बड़ा करने का प्रयास किया। कुछ हिंदी प्रकाशनों ने दलित-

चेतना/दलित आंदोलन को महिलाओं की बहस के साथ-साथ काफी जगह प्रदान की। प्रेमचंद के प्रसिद्ध महाकाव्य "रंगभूमि" को इक्कीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में दलित लेखकों द्वारा सार्वजनिक रूप से जला दिया गया था, उन्हें एक दलित विरोधी लेखक के रूप में ब्रांड किया गया था। दलित प्रवचन को साहित्य के केंद्र में रखकर ताना प्रकरण ने इसे और मजबूत किया।

प्रेमचंद को दलित विरोध के केंद्र में रखने के बाद, हिंदी भाषी दुनिया में एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया हुई, और प्रेमचंद के समर्थन और आलोचना के साथ-साथ दलित लेखकों की आत्मकथाओं, दलित कहानियों के संग्रह, और संकलन की पत्रिकाओं में लेख छपने लगे। प्रेमचंद की दलित कहानियां। महत्वपूर्ण साहित्यिक आलोचना पुस्तकों का प्रकाशन शुरू होने का समय शुरू हुआ।

दलित साहित्य:

भारत की स्वतंत्रता के बाद, देश में दलित समुदाय में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए, जिनमें स्वतंत्रता, शिक्षा, आरक्षण, संवैधानिक संरक्षण, जातिगत भेदभाव के लिए दंड की व्यवस्था, दलित समाज में एक बुद्धिजीवी वर्ग का उदय, और राजनीति, सरकार और अन्य में भागीदारी शामिल है। प्रभाव के क्षेत्र। इसके बावजूद, पूरे देश में अभी भी जातिगत पूर्वाग्रहों के उदाहरण थे, और अस्पृश्यता और दमन को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया जा सका।

कुछ मायनों में, केवल दलित लेखक ही समकालीन दलित बहस में शामिल हो सकते हैं। वास्तविक दलित साहित्य दलित लेखकों द्वारा लिखा गया है; यह आत्म-साक्षात्कार का कार्य है और किसी भी तरह से दलित लोगों का प्रतिनिधि नहीं है। दलित लेखन में परंपरा का अभाव है, स्वतंत्र है, एक अद्वितीय साहित्य-दर्शन है, और सामान्य रूप से साहित्य से इसका कोई लेना-देना नहीं है। कोई कनेक्शन नहीं है। इनमें से कुछ विचार और तर्क समकालीन दलित प्रवचन में मौजूद हैं, लेकिन हिंदू आबादी के एक बड़े हिस्से के बहिष्कार और गैर-दलितों के अनुकूल दलित साहित्य की अनुपस्थिति से प्रवचन की ताकत और दायरा कम हो गया है। है। दलित लेखकों को पता होना चाहिए कि इस नीति से उनके दर्शकों की संख्या कम हो जाएगी और कई अन्य लेखकों को अपने प्रशंसकों की सहानुभूति खोने का डर होगा। दलित लेखकों को प्रेमचंद के दलित दर्शन पर सवाल उठाने और उसकी आलोचना करने की पूरी छूट है क्योंकि साहित्य एक ऐसा लोकतंत्र है जो सभी का स्वागत करता है, लेकिन उन्हें प्रेमचंद के काल और परिवेश को भी ध्यान में रखना चाहिए। गांधी ने "हरिजन" नामक एक समाचार पत्र की स्थापना की, लेकिन भले ही अब एक निश्चित जाति को "हरिजन" के रूप में संदर्भित करना कानून के खिलाफ है, फिर भी हम गांधी को इसके लिए आपराधिक रूप से जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते हैं। हरिजन, जिसका अर्थ है हरि का आदमी या भगवान का आदमी, गांधी के जीवनकाल के दौरान एक

सम्मानित शब्द था। "दलित" शब्द को अब आक्रामक नहीं माना जाता है, हालांकि यह भविष्य में बदल सकता है। गांधी, प्रेमचंद, स्वामी विवेकानंद और अन्य लोगों ने "दलित" शब्द को अछूत जातियों तक सीमित नहीं रखा।

दलित साहित्य की अवधारणा:

प्रेमचंद समकालीन हिंदी साहित्य के इतिहास में पहले लेखक हैं, और वह भी एक अधीन भारत में, जिन्होंने अपनी मानवता को नष्ट होने से इनकार करते हुए दलितों के खिलाफ सदियों की पीड़ा, उत्पीड़न और जघन्य मानवीय भेदभाव को सहन किया है। स्वामी वी इवेकानंद ने इन शूद्र जातियों के उत्पीड़न और मानवता पर प्रकाश डाला, और प्रेमचंद ने अपनी किताबों और कहानियों के माध्यम से दलित प्रवचन के वर्तमान आधुनिक संस्करण को प्रस्तुत करके उनके नक्शेकदम पर चलते हुए। हमने उनके विचारों को देखा है, लेकिन उनके लेखन में दलित जागरूकता भी एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में दिखाई देती है। पुस्तकों के संबंध में, उनकी रचनाओं "रंगभूमि" और "गोदान" में कुछ ऐसे व्यक्ति और घटनाएँ हैं, जो अपने सहानुभूतिपूर्ण गुणों के बावजूद, उत्कृष्ट दलित लेखकों के रूप में सामने आते हैं। सूरदास, उनके महाकाव्य कार्य "रंगभूमि" का मुख्य पात्र, दलित जाति का सदस्य है। दलित लेखकों ने विरोध किया, यह दावा करते हुए कि प्रेमचंद ने सूरदास को दलित बनाकर और उन्हें अंधा के रूप में चित्रित करके दलित जाति का अपमान किया है। इन कारणों में से कुछ कारणों से, दलित लेखकों ने "रंगभूमि" में आग लगा दी और इसे पाठ्यक्रम से हटाने के लिए एक अभियान शुरू किया, लेकिन वे यह सुनिश्चित करने में असमर्थ थे कि दलितों को अंधे नायकों के रूप में चित्रित करके दलित जाति को नाराज किया गया था। दरअसल, सूरदास ने दलित का काम पूरा कर लिया था। जाति का गौरव बढ़ाया।

पुनर्जागरण से संबंधित प्रेमचंद की कहानियां:

प्रेमचंद एक प्रसिद्ध लेखक और कहानीकार थे। अपने लेखन के माध्यम से, उन्होंने भारतीय संस्कृति के कई पहलुओं को उजागर किया है, जो कि उनके गहन परिचित होने से संभव हुआ है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के बारे में प्रसिद्ध वास्तविकता का खुलासा किया। वे उस समय भी अधिक अशिक्षित हो रहे थे। शिवकुमार मिश्रा के अनुसार, "जब प्रेमचंद कहानी के मंच पर उभरे, तो वे न केवल भारत की अपनी कहानी संस्कृति से परिचित थे, बल्कि उन्हें उर्दू और अरबी-फ़ारसी कहानियों और कहानियों की भी व्यापक समझ थी। उन्होंने कथा साहित्य के पश्चिमी लेखकों को इस रूप में पढ़ा था। अच्छी तरह से। इसके बावजूद, उनके लेखन ने कहानी लेखन की एक पूर्व निर्धारित शैली का पालन करने के बजाय अभिव्यक्ति के अपने तरीकों का पालन किया। उनका मानना था कि एक अच्छा वर्णन पाठक को

अपने कामुक इरादे को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने के लिए सीधा, छोटा और सक्षम होना चाहिए। [2] प्रेमचंद की कहानी कहने की तकनीक के अपने विश्लेषण में, डॉ. रामविलास शर्मा ने लिखा: "कहानी एक मनोरंजक वस्तु है; यह श्रम से छुट्टी लेने के बाद सुनने के लिए कुछ है। इसके अलावा, जल्दबाजी मामले को और खराब कर देती है। प्रेमचंद अक्सर सरल, संक्षिप्त भाषा का उपयोग करते हुए कहानी कहते हैं जो शब्दों को स्वाभाविक रूप से विकसित करने की अनुमति देता है। उसकी शाखाएँ और पत्तियाँ एक अंग्रेजी बगीचे के माली की तरह अकेली रह जाती हैं, जिससे फूल और पत्तियाँ विकसित होती हैं और हवा में लहराती हैं। वास्तविक जीवन की घटनाओं पर टिप्पणियाँ भी आम हैं। व्यंग्य, मूल उपमाएं और हास्य कभी-कभी पाठकों की रुचि जगाते हैं।

पुनर्जागरण का उदय और विकास:

अंग्रेजी में, पुनर्जागरण शब्द को "रेनेसा" के रूप में जाना जाता है। पुनर्जन्म फ्रांसीसी शब्द "रेनेसा" या "पुनर्जागरण" का अर्थ है। फ्रांसीसी इतिहासकार मिशेल (1798-1874 ई.) और बुर्कहार्ट ने पुनर्जागरण शब्द को एक ऐतिहासिक धारणा (1818-1897 ई.) में विकसित किया। ' [1] ऐसा माना जाता है कि पुनर्जागरण का मतलब यही है, जो प्राचीन ग्रीक और रोमन साहित्य और संस्कृति का पुनरुद्धार है। हालाँकि, यह पूरी तरह सटीक नहीं है। "पुनर्जागरण" शब्द की परिभाषा हमेशा विकसित हो रही है। इसने सोलहवीं शताब्दी तक लैटिन और ग्रीक साहित्य के पुनरुत्थान का संकेत दिया। इस आंदोलन को इतालवी में प्राचीन भाषाओं और साहित्य के "रिनिसिमेंटो" या "पुनर्जन्म" के रूप में जाना जाता है। विद्या, या कला के इस "पुनर्जन्म" या "पुनरुत्थान" के पीछे का विचार मध्य युग को आधुनिक युग से अलग करना था। नई जागरूकता के साथ, मानवता के मूल्य में वृद्धि हुई, और सभी क्षेत्रों में विकास में तेजी आई। दूसरे शब्दों में, हम तर्क दे सकते हैं कि पुनर्जागरण अध्ययन, कला, साहित्य और संस्कृति में उत्थान का काल था।

भारत में पुनर्जागरण की उत्पत्ति:

कालांतर में भारत ने काफी बदलाव देखा है। मुस्लिम आक्रमण से पहले, भारत राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से आर्यों के शासन में फल-फूल रहा था। हालाँकि, एक बार जब मुसलमानों ने भारत पर अधिकार कर लिया, तो ये स्थितियाँ बदल गईं। भारतीय राजनीतिक अधीनता से हीन भावना, गरीबी और दुर्बलता जैसी बीमारियों से पीड़ित थे। भारतीय समाज के लिए पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता से यह मुठभेड़ विनाशकारी साबित हुई। हालाँकि मुगल अभी अभी आए थे, वे लगभग पूरी तरह से घुलमिल गए थे। हालाँकि वे मूल रूप से यहाँ लूट करने आए थे, लेकिन उन्होंने अंततः नियंत्रण कर लिया और रहने का फैसला किया।

इस संबंध में, भवानीलाल भारतीय का निम्नलिखित मत है: "विदेशी प्रभुत्व से उत्पन्न भावना ने भारत के विशाल हिंदू समुदाय के धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक गुणों को अपूरणीय क्षति पहुंचाई थी। इहलोका और उसके बाद के जीवन के प्रति लोगों का स्वस्थ दृष्टिकोण गायब हो गया था। प्राचीन वैदिक उपनिषदों के साथ-साथ रामायण और महाभारत के समाजों में। इसके बजाय, मौर्य और गुप्त युग की समृद्धि और वैभव को साहित्य, संगीत, कविता और कला सहित कला में लोगों की रुचि की विशेषता थी। वास्तुकला के क्षेत्र में बढ़ती सफलताओं का इतिहास भी नीचे चला गया।उस समय की अवधि से भारत का महान भूगोल और भारत की विजय की सांस्कृतिक विरासत पूर्व महासागर अतीत के अवशेष थे। दमनकारी काले बादलों ने देश की संस्कृति, धर्म और जीवन के सामान्य तरीके को कवर किया, जैसे कि शिकायतों, आपदाओं, शोषण और शापों की बारिश ने जनता के दुख को बढ़ा दिया।

इस काल में लोग आर्थिक रूप से एक-दूसरे पर इतने निर्भर थे कि गरीब और गरीब होने लगे और किसान मजदूरों के रूप में काम करने लगे। खेती, कुटीर उद्योग, गृह उद्योग आदि सभी तबाह हो गए। अंग्रेज अधिक से अधिक उत्पीड़ित होते जा रहे थे। अंग्रेजों ने पहले ही राज पर कब्जा कर लिया था, और बाद में वे व्यावसायिक रूप से मनमाना व्यवहार भी करने लगे। नतीजा यह हुआ कि अंग्रेज अमीर हो गए और भारतीय दरिद्र हो गए। राजनीतिक, आर्थिक और आध्यात्मिक रूप से हमारा समय आ गया था। हालाँकि, हमारे धार्मिक नेताओं ने भारतीय संस्कृति की नींव को भी मिटा दिया था।

भारतीय जनता उनकी भेद्यता से अवगत थी। लोग भले ही शिक्षित न हों लेकिन हमेशा सावधान रहे हैं और सिद्धांतों के मूल को समझते हैं। जबकि साक्षरता विवेक के उत्पादन में उपयोगी हो सकती है, निरक्षरता भी उचित हो सकती है और इसकी अंतरात्मा अधिक प्रभावी हो सकती है। वे न केवल आर्थिक और यौन दुनिया के आदर्शों द्वारा नियंत्रित होते हैं, बल्कि धर्म और मुक्ति के दृष्टिकोण से भी नियंत्रित होते हैं। भारत की कर्मभूमि की नींव पुरुषार्थ चतुरता का योग है। भारत का मन सिद्धि को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि योगिक उत्पत्ति के चार सिद्धांत दैनिक जीवन के नियंत्रण में न हों। तलाक, एक दूसरे के प्रति शत्रुता, घृणा, सत्ता के लिए लोभ, विज्ञान की अज्ञानता और ज्ञान की कमी भारत के नुकसान के कारण थे और उन्होंने उन रीति-रिवाजों को जन्म दिया जो उस तबाही का कारण बने। मनीषा भारत में चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी और यह राष्ट्र इन आदर्शों को विकसित करने के लिए उत्सुक था, यही कारण है कि यह स्वतंत्र और व्यापक रहा है। 1857 के विद्रोह के परिणामस्वरूप ऐसे सिद्धांतों की बहाली के लिए एक राष्ट्रीय मंच की स्थापना की गई थी।

पुनर्जागरण और विभिन्न साहित्यिक विधाएँ:

पुनर्जागरण, जिसे पुनर्जागरण के रूप में भी जाना जाता है। इसे पूरे यूरोप, फ्रांस और इटली में "पुनर्जागरण" के रूप में जाना जाता है। 13वीं और 14वीं शताब्दी के दौरान, यह पहली बार यूरोप में उभरा। जब हमारे देश में "लोक जागरण" हुआ। 1857 का युद्ध "पुनर्जागरण" की शुरुआत के साथ समाप्त हुआ। 19वीं सदी तब समाप्त हुई। भक्ति आंदोलन के माध्यम से, लोगों ने एक बार 14 वीं शताब्दी में जागृति की खोज की थी। फलस्वरूप 19वीं शताब्दी में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण सुप्त अवस्था में रहने के बाद लोगों में एक बार फिर जागृति आई। इसी कारण इसे पुनर्जागरण काल या काल कहा गया। 1857 के विद्रोह के परिणामस्वरूप हुए पुनर्जागरण ने मध्ययुगीन युग दिया, जो अपनी सुस्ती, ठहराव और रूढ़िवादिता के कारण दोहराव और गतिहीन हो गया था, नया जीवन। इसी के साथ आधुनिक युग की शुरुआत मानी जाती है। हिंदी साहित्य के अपने इतिहास में, डोंगेंद्र ने "आधुनिक" शब्द को दो अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं। "मध्य युग से भिन्न और एक नए ब्रह्मांडीय दृष्टिकोण के साथ" 63 अर्थात् समकालीन समय में मध्यकाल से विविध पैटर्न थे। इस क्षेत्र के लोग चीजों के प्रति अधिक जागरूक होते जा रहे थे। धार्मिक नेताओं और दार्शनिकों के व्याख्यान थे। इस समय के दौरान, भारत पश्चिमी संस्कृति की व्यापक इच्छा में बह गया था। "मशीन युग" उसी समय शुरू हुआ जब अंग्रेजी निर्देश पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। अपनी सुविधा के लिए और उत्पादकता बढ़ाने के लिए, अंग्रेजों ने उद्योगों में बहुत सारी आधुनिक मशीनरी स्थापित की। यह प्रेस, डाक, टेलीफोन और टेलीग्राफ की शुरुआत थी। जब रेलवे, बस और कार का विकास हुआ, तो राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद जैसे समाज सुधारकों और अन्य लोगों ने सती और बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए पहल की और शिक्षा में सुधार के लिए काम किया। इस समय तक हमारा देश पूरी तरह से जाग चुका था और वे स्वतंत्रता के लिए प्रगति कर रहे थे। इस मुक्ति के लिए पूरे देश को एकजुट होने की जरूरत थी, इसलिए भारतीयों ने अपने फायदे के लिए अंग्रेजी तकनीक का इस्तेमाल किया और हर क्षेत्र के स्थानीय समाचार पत्रों के माध्यम से अपनी भाषा में संदेश प्रसारित करना शुरू कर दिया। उसी समय, हमारे लेखकों ने अपने लेखन के माध्यम से जन जागरूकता बढ़ाने का प्रयास करना शुरू कर दिया। इस जागृति के फलस्वरूप ही हमारे देश को स्वाधीनता प्राप्त हुई।

जैसा कि हम पहले ही बता चुके हैं, "नवाजाग्रति" के उदय के साथ राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन होने लगे। इस संक्रमण के परिणामस्वरूप व्यक्ति और समाज के बारे में उनके सोचने का तरीका बदल गया। इसने मध्यकालीन पूर्वधारणाओं को मिटाकर आधुनिकता को जन्म दिया। दूसरे शब्दों में, आधुनिक युग का श्रेय पुनर्जागरण, पुनर्जागरण या स्वयं पुनर्जागरण को दिया जा सकता है। चूँकि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब है, समाज में कोई भी परिवर्तन निस्संदेह साहित्य पर प्रभाव डालता है।

हिंदी में कई साहित्यिक विधाओं का निर्माण पश्चिमी संस्कृति की परस्पर क्रिया, विभिन्न मशीनरी की पहुंच और हमारे देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप हुआ।

उपसंहार

प्रेमचंदजी के काम में, मध्यम वर्ग की दयनीय स्थिति को हृदयविदारक यथार्थवादी तरीके से दिखाया गया है। दलित समाज पर प्रेमचंद के विचारों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया गया, और उन्हें "प्रेमचंद: विविध-परमासन" (संपादक: अमृत राय) पुस्तक के "अछूत" अध्याय में शामिल किया गया है। ये सभी विचार 19 दिसंबर, 1932 से 14 मई, 1934 तक साप्ताहिक "जागरण" में टिप्पणियों के रूप में सामने आए। प्रेमचंद इन बयानों में गांधी के साथ शामिल होते हैं और उनकी दलित जागरूकता के कुछ मूल साझा करते हैं। प्रेमचंद मंदिर प्रवेश के विषय को सामने लाते हैं, जो गांधी की अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई का केंद्र था। प्रेमचंद ने अपनी कृतियों में भारतीय सभ्यता की बुराइयों का बखूबी चित्रण किया है। प्रेमचंद ने अपने पात्रों और बातचीत के माध्यम से अपने उपन्यासों में उस युग के भारत के सार को ईमानदारी से उकेरा है। प्रेमचंदजी गांधीजी से प्रेरित थे और उन्होंने भारत में दलितों और किसानों पर हो रहे अत्याचारों का विरोध किया था।

ग्रन्थ -सूची

1. प्रेमचंद जीवन और कृतित्व हंसराज 'रहबर' रामलालपुरी, आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी, दिल्ली – 6

2. प्रेमचन्दः उनकी कहानीकला - सत्येन्द्र, साहित्य रत्न भंडार, आगरा

3. प्रेमचन्द डॉ. जगतनारायण हैकरवाला ,प्रकाशक अक्षरपीठ ,प्रकाशन 84, मोहिलनगर, इलाहाबाद - 6, प्रथम संस्करण - 1972

4. प्रेमचंदः एक अध्ययन राजेन्द्र गुरू (जीवन, चिन्तन, कला) मध्यप्रदेशीय प्रकाशन, भोपाल, वर्ष – 1958

5. प्रेमचन्द विश्वकोष - कमलकिशोर गोयनका, भाग - 1, प्रकाशक - साहित्य निधि, सी - 38, ईस्ट कृष्णनगर, दिल्ली - 110005, प्रथम संस्करण – 1981

6. प्रेमचन्द घर में - श्रीमती शिवरानी देवी, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली

7. नवजागरण और आचार्य रामचन्द शुक्ल - बलीसिंह, शंकर पब्लिकेशन, भजनपुरा, दिल्ली - 110053, प्रथम संस्करण – 2000

8. भारतीय नवजागरण और भारतेन्दुः नर्मद युग का साहित्य - महावीर सिंह चौहान, अनुस्नातक हिन्दी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ - विद्यानगर, प्रथम संस्करण - 1995

9. नवजागरण के पुरोधा : दयानंद सरस्वती - डॉ. भवानीलाल भारतीय, प्रकाशक - वैदिक पुस्तकालय, परोपकारिणी सभा, दयानन्दाश्रम, केसरगंज, अजमेर, प्रथम संस्करण - 1983

10. हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास भाग 9, संपादक सुधाकर पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी , प्रथम संस्करण - 1977